गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-७२

नित नवल कुमार पवन
तीन रचनाक आलोचनात्मक अनुशीलन

II

आशीष अनचिन्हार

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–७२

नित नवल कुमार पवन

तीन रचनाक अनुशीलन पर
आलोचनात्मक पुनर्पाठ आ सम्पादकीय विवेचन

आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२६

प्रकाशन-विवरण

ग्रन्थ : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड-७२

सम्पादकीय विषय : नित नवल कुमार पवन

समीक्षित मूल ग्रन्थक लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

प्रकाशन : विदेह, २०२६

भाषा : मैथिली

मुद्रित आकार : ६ × ९ इञ्च

© २०२६ Gajendra Thakur / Preeti Thakur

सर्वाधिकार सुरक्षित।

सम्पादकीय टिप्पणी

ई खण्ड आलोचना-ग्रन्थक आलोचना थिक। एतय कुमार पवनक मूल कथा प्रत्यक्ष रूपेँ प्रस्तुत नहि अछि; मूल कथासभक सम्बन्धमे तथ्यक आधार समीक्षित ग्रन्थक विवेचन आ ओकर सन्दर्भसूची अछि।

अनुक्रम

01. सम्पादकीय प्रस्ताव : मूल कथा नहि, आलोचनाक आलोचना

02. ग्रन्थक वास्तु : तीन स्वतंत्र अनुशीलन आ एक तुलनात्मक शिखर

03. ‘पइठ’ : स्वर्ग-स्वीकृतिक लोकविश्वास आ जीवितक अन्न

04. ‘डायरीक खाली पन्ना’ : अधिकारक प्रकाश आ आत्मसाक्ष्यक अन्हार

05. ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’ : कहबीक अर्थक अस्थिर यात्रा

06. तुलनात्मक खण्ड : तीन आवाज, मुदा दू मुख्य धुरी

07. साहित्येतिहासक तुलना : सावधानी आ सम्भावना

08. सन्दर्भ-पद्धति, सिद्धान्त आ जाँचयोग्यता

09. आलोचनाक भाषा : संयम, पुनरावर्तन आ प्रस्तावनात्मक लय

10. चयन आ मूल्याङ्कन : ग्रन्थक भीतर सर्वाधिक सफल व्याख्या

11. समग्र मूल्याङ्कन : आलोचना कोन ठाम सफल, कोन ठाम अपूर्ण

12. सम्पादकीय निष्कर्ष : अनसुनी भूख, नलिखल जीवन आ अनिश्चित मूल्य

13. ग्रन्थाधार आ पाठसीमा

सम्पादकीय प्रस्ताव : मूल कथा नहि, आलोचनाक आलोचना

‘नित नवल कुमार पवन’ गजेन्द्र ठाकुरक २०२६ ईस्वीक एकटा आलोचनात्मक ग्रन्थ अछि, जाहिमे कुमार पवनक तीन रचना—‘पइठ’, ‘डायरीक खाली पन्ना’ आ ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’—केँ स्वतंत्र अध्ययनक बाद तुलनात्मक दृष्टिसँ पढ़ल गेल अछि। एहि खण्डक विषय कुमार पवनक समूचा रचनासंसार नहि, वरन् एहि तीन रचनाक सम्बन्धमे गजेन्द्र ठाकुर द्वारा निर्मित आलोचनात्मक पाठ अछि। ई अन्तर स्पष्ट राखब आवश्यक अछि; कारण समालोचकक विवेचन आ मूल रचनाक प्रत्यक्ष पाठ एकहि प्रकारक प्रमाण नहि होइत।

एहि सम्पादकीय अनुशीलनक आधार प्रस्तुत साठ-पृष्ठीय ग्रन्थक पाठ अछि। मूल कथाक स्वतंत्र प्रति एहि पाठाधारमे सम्मिलित नहि अछि। तेँ कनियाँ काकी, प्राचार्य अथवा भुवन ककाक सम्बन्धमे जे कथात्मक विवरण आएत, ओकर स्रोत गजेन्द्र ठाकुरक विवेचन थिक; तकरा मूल कथाक शब्दशः प्रमाण घोषित नहि कएल जा सकैत। जतेक ठाम समीक्षा समालोचकक तर्क, अध्याय-विन्यास, प्रसंग-चयन, भाषिक स्वर वा प्रमाणक सीमा पर निर्णय दैत अछि, ओ निर्णय एहि उपलब्ध आलोचना-पाठपर सीधे आधारित अछि।

ग्रन्थक प्रारम्भिक कथनमे मनुष्यक इच्छा आ समाजक बनाओल नियमक संघर्ष साझा सूत्र बनैत अछि। भोजक पाँति, महाविद्यालयक कार्यालय आ प्रतिष्ठित व्यक्तिक सान्निध्य तीन भिन्न ठाम अछि; मुदा ग्रन्थ हुनका ‘मान’, ‘स्वाधीनता’ आ ‘नैतिक विवेक’क प्रश्नमे जोड़ैत अछि। आलोचनाक शक्ति एतहि जाँचल जाएत: की ई साझा सूत्र भिन्न रचनाक विशिष्ट शिल्पकेँ देखेबाक अवसर दैत अछि, अथवा अन्ततः सभ रचनाकेँ एकहि नैतिक निष्कर्षमे समेटि दैत अछि?

ग्रन्थक वास्तु : तीन स्वतंत्र अनुशीलन आ एक तुलनात्मक शिखर

पोथीक अनुक्रम चारि मुख्य खण्डमे संगठित अछि। 'पइठ'क आलोचना पृष्ठ ६ सँ २० धरि, 'डायरीक खाली पन्ना'क पृष्ठ २१ सँ ३५ धरि, 'अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप'क पृष्ठ ३६ सँ ४८ धरि आ तुलनात्मक समीक्षा पृष्ठ ४९ सँ ५८ धरि चलैत अछि। प्रस्तावना, समाहार आ सन्दर्भसूची एहि ढाँचाकेँ आरम्भ आ अन्त दैत अछि। स्वतंत्र अध्ययन पहिने आ तुलना बादमे रखबाक क्रम उचित अछि, किएक तँ तुलना लेल रचनासभक अलग प्रकृति चिन्हब पहिल शर्त थिक।

तथापि शीर्षकमे 'तीन रचनाक आलोचनात्मक अनुशीलन आ कथा-दृष्टिक तुलनात्मक विवेचन'क घोषणा रहितहुँ चौथा खण्डक अधिकांश विवेचन 'पइठ' आ 'डायरीक खाली पन्ना'क दू-पक्षीय संवाद बनैत अछि। 'अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप'क भूमिका प्रस्तावना आ अन्तिम समाहारमे पुनः उभरैत अछि, मुदा तुलनाक मध्यवर्ती श्रेणी—समय, दृष्टिकोण, स्त्री-अनुभव, सामाजिक संस्था, बहुस्वरता—मे ओकर भाग अपेक्षाकृत कम अछि। एहि अन्तरकेँ अभाव कहबाक संग एक सम्भावना सेहो बुझबाक चाही: प्रथम दू दीर्घकथा समान विस्तारक तुलनाक निमित्त निकट छथि, तेसर कथात्मक व्यंग्य विधागत रूपसँ भिन्न अछि। समालोचक जँ एहि असमानताकेँ अपन तुलनात्मक पद्धतिक घोषित नियम बनबैतथि, तँ विन्यास आओर साफ होइत।

ग्रन्थमे प्रसंग-दर-प्रसंग उपशीर्षक देल गेल अछि। पाठक एके रचनाक विषय, चरित्र, प्रतीक, सामाजिक सन्दर्भ, शिल्प आ सीमा धरि अलग-अलग पहुँचैत अछि। एहि विवरणप्रियता सँ आलोचनाक बोधगम्यता बढ़ैत अछि; मुदा कोनो प्रतीक एक बेर स्थापित भेलाक बाद अनेक उपशीर्षकमे लगभग समान नीतिगत अर्थ सहित फेर उपस्थिति दैत अछि। संश्लेषण आ पुनरुक्तिक बीचक रेखा एहि ग्रन्थक केन्द्रीय सम्पादकीय कसौटी बनैत अछि।

‘पइठ’ : स्वर्ग-स्वीकृतिक लोकविश्वास आ जीवितक अन्न

‘पइठ’ सम्बन्धी अध्ययनक सर्वाधिक आवश्यक निर्णय शीर्षकक अर्थ-निर्धारण अछि। समालोचक स्पष्ट करैत छथि जे एतय ‘पइठ’क प्राथमिक अर्थ भोजक पाँतिमे बैसब नहि, मृतात्माक स्वर्गमे स्थान अथवा स्वीकार्यता पएबाक लोकविश्वास अछि। एहि शब्दार्थक शुद्धतासँ व्यंग्यक नैतिक केन्द्र ठीक ठाम स्थापित होइत अछि। पाँति, भात आ सामाजिक मर्यादा कथाक दृश्य-उपकरण भऽ सकैत अछि, मुदा शीर्षकक मूल धार्मिक आशयकेँ ओकरामे लुप्त कऽ देब साहित्यिक भूल होइत।

समालोचकक अनुसार कनियाँ काकी जीवित रहिते अपन बेटीक बेटा लेल कनेक भोजन माँगने छलीह, आ एहि आग्रहपर घर-समाजमे कोलाहल उठल। मृत्यु उपरान्त हुनकर आत्माक स्वर्ग-पइठ लेल विशाल भोज सम्भव भेल। ग्रन्थ एहि दू समयक अन्तरकेँ कथा-संरचनाक नैतिक केन्द्र बनबैत अछि। ई तुलना मात्र धनक असमान व्यय नहि; ककर आवश्यकता सुनल गेल आ ककरा मान देल गेल, तकर मूलभूत प्रश्न थिक। परलोकक हित लेल प्रचुर आयोजन आ इहलोकक न्यूनतम दायित्वक उपेक्षा एक-दोसरक प्रतिलोम बनैत अछि।

एहि अध्ययनक उल्लेखनीय संयम ई अछि जे ओ धार्मिक विश्वासक सत्य-असत्यक निर्णय लेल कथा पर अनावश्यक भार नहि दैत। प्रश्न कर्मकाण्ड अपने-आप खराब अछि कि नहि—ई नहि; प्रश्न ई अछि जे कर्मकाण्डक सामाजिक प्रचुरताक संग जीवित स्त्रीक साधारण इच्छा अस्वीकार्य किएक भेल। आलोचनाक एहि भेदबुद्धिसँ पाठक धार्मिक लोकसंस्कृतिक जटिलता आ मानवीय दायित्वक नाप-जोख दुनूकेँ एक संग देखैत अछि।

अन्नक दोहरापन : पालनक वस्तु आ प्रतिष्ठाक प्रदर्शन

‘पइठ’क व्याख्यामे भातक द्वैध अर्थ बारम्बार खोलल गेल अछि। कनियाँ काकीक जीवित आग्रहमे अन्न नेनाक भूख मेटबाक साधन अछि; मृत्युक बादक भोजमे वैह अन्न अनुष्ठानिक प्रतिष्ठा आ सामुदायिक मानक द्योतक भऽ उठैत अछि। ई भेद मूल्यवान अछि, कारण एकहि वस्तुक अर्थ सामाजिक परिस्थिति

बदलिते परिवर्तित होइत अछि। साहित्यिक आलोचना एहि संक्रमणकेँ पकड़ैत अछि, न कि केवल भोजनक दृश्यकेँ दर्ज करैत अछि।

मुदा पृष्ठ ६–२०क विस्तारमे कनियाँ काकीक माँग बनाम मृत्योत्तर भोजक विरोध अनेक बेर लगभग समान वाक्य-निर्णयक संग लौटैत अछि। 'शीर्षक', 'जीवनकालक माँग', 'भोजक राजनीति', 'स्त्री-पक्ष', 'उपसंहार' आ 'उपलब्धि'क हिस्सामे केन्द्रीय स्थापना दोहरायल अछि। पुनरागमन विषयक एकाग्रताक प्रमाण तखन बनैत जखन प्रत्येक वापसी कोनो नब पाठस्तर खोलैत। एहि ग्रन्थमे किछु वापसी नव सामाजिक अर्थ दैत अछि, मुदा किछु केवल पूर्वनिर्णयकेँ पुष्ट करैत अछि। छोट सम्पादकीय पुनर्संयोजनसँ आलोचनाक प्रभाव आओर तीक्ष्ण भऽ सकैत छल।

गामक बहुस्वर : दलानसँ निजी स्मृति धरि

समालोचक 'पइठ'केँ एकटा दुष्ट नायकक कथा नहि बनबैत। सरवन बाबूक आयोजन, राघव आ आन सहायक पात्र, घर-परिवारक स्मृति, आमन्त्रित लोक आ भीड़क व्यवहार एक सामाजिक मानचित्र बनबैत अछि। गाम एतय स्थिर पृष्ठभूमि नहि; ओ विचार, अनुमान, भीड़, श्रद्धा, आशंका आ प्रतिष्ठाक संघर्षसँ रचल सामूहिक चरित्र बनैत अछि। एहन अध्ययन ग्रामीण समाजक एकरेखीय आदर्शीकरण वा निन्दा दुनूसँ बचैत अछि।

ग्रन्थक 'आगि-पानि-लोह-पाथर' सम्बन्धी विवेचन घटनाक समाचार आ घटनाक सत्य बीच भेद करैत अछि। अफवाह अप्रमाणित रहि सकैत अछि, मुदा ओकर सामाजिक प्रभाव वास्तविक होइत अछि। ई निर्णय आलोचनाक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि, किएक तँ सामूहिक घबराहटकेँ केवल कथानकक रोमांच नहि, सामाजिक ज्ञानक अपूर्णताक रूपमे पढ़ल गेल। एहि ठाम कथा कथन-सत्य आ सामुदायिक प्रतिक्रियाक दोहरा अध्ययन सम्भव करैत अछि।

तथापि अनेक पात्रक 'बहुस्वरता'क दावाक तुलना ओकर सभक स्वतंत्र वाणीक सूक्ष्म उदाहरणसँ अधिक पुष्ट होयबाक चाही। उपलब्ध आलोचना सामाजिक विविधता गनबैत अछि, मुदा किछु ठाम पात्र-दर-पात्र वाक्यरचना, बोलीक अन्तर, कथावाचकक दूरी आ प्रतिवादी स्वरक विशिष्ट शब्द-प्रमाण कम

देइत अछि। बहुस्वरताकेँ केवल बहु पात्रक उपस्थिति सँ पूर्ण सिद्ध नहि कएल जा सकैत।

कनियाँ काकी : केन्द्रमे पीड़ा, किनारपर कर्तृत्व

समालोचक एकटा महत्त्वपूर्ण प्रश्न स्वयं स्वीकारैत छथि: कनियाँ काकीक उपेक्षा कथा-सम्पूर्णक नैतिक केन्द्र अछि, मुदा स्त्रीक स्वनिर्णयक स्वतंत्र विस्तार कतबा अछि? स्त्रीक दुखक प्रतिनिधित्व आ स्त्रीक अपन दृष्टिसँ निर्णय लेबाक अवसर समान नहि। कनियाँ काकीक ममताक प्रसंग पाठककेँ द्रवित करैत अछि; तथापि एही ममताकेँ स्त्रीक एकमात्र पहचान मानि लेब एक दोसर सीमा रचि सकैत अछि।

'गुँजा, उत्तराधिकार आ पारिवारिक असमानता' शीर्षकक समीक्षामे पुत्र, बेटी, पुतोहु आ माय सभकेँ एक परिवारक भीतर अलग मान्यता भेटबाक प्रश्न उठैत अछि। ई स्थान नैतिक केन्द्रकेँ कनियाँ काकीक त्यागपर सीमित रखबाक बदला परिवारक मूल्य-गणित धरि विस्तारित करैत अछि। यथार्थमे पाठक जानय चाहैत अछि जे कुन व्यवहार कोन पीढ़ी द्वारा सामान्य मानल गेल, आ ओ सामान्यता कोन प्रकारक सत्ता बनैत अछि। एहि प्रश्नपर विश्लेषण आओर प्रत्यक्ष पाठ-साक्ष्य संग बढ़ितैक तँ स्त्री-दृष्टिक उपलब्धि अधिक स्पष्ट होइत।

सम्पादकीय रूपसँ एकरा ग्रन्थक आत्मसमीक्षात्मक शक्ति मानब चाही: समालोचक अपन प्रशंसाकेँ प्रश्नसँ काटैत छथि। ई केवल औपचारिक दोष-सूची नहि, मूल्याङ्कनक बुनियादी नैतिकता अछि।

चित्र आ बालसाहित्य : उपयोगी तुलना कि विषयान्तर?

'पइठ'क अध्ययनमे श्वेत-श्याम चित्र, आँखिक आवर्ती बिम्ब आ लोकचित्रक सघन रेखाकेँ दृश्यात्मक अर्थक स्वतन्त्र परत मानल गेल अछि। चित्र सजावटक समकक्ष नहि; ओ शब्दक कथ्यसँ संवाद करैत अछि—ई स्थापना प्रशंसनीय अछि। मुदा गद्य-चित्रक सम्बन्ध सिद्ध करबाक लेल चित्रक प्रकाशित अनुक्रम, स्थान आ स्पष्ट दृश्य-साक्ष्यक व्यवस्थित उल्लेख अपेक्षित अछि। एहि ग्रन्थक

विश्लेषण चित्रक सम्भावित अर्थ दैत अछि; प्रत्येक चित्रक पाठ-सम्बन्धक निश्चित मानचित्र नहि।

बाल-साहित्यक इतिहास सम्बन्धी विस्तृत प्रसंग एहिसँ निकलैत अछि जे सचित्र रूपक कारण प्रौढ़ रचनाकेँ बालसाहित्य मानि नहि लेबाक चाही। शिशु-लोकगीत, बाललोककथा, प्रीति ठाकुरक चित्रकथा आ नव बाल-उपन्यास समीक्षाक सन्दर्भ संग्रहित कएल गेल अछि। एहिमे अभिलेखीय उपयोगिता अछि, विशेषत: मौखिक परम्परा आ छपल चित्र-पुस्तकक भेद स्पष्ट करबामे। मुदा मूल प्रश्न 'पइठ'क व्यंग्य, स्त्री-अनुभव आ लोकविश्वास थिक। ऐतिहासिक सन्दर्भक विस्तार विषयपर नब रोशनी जतेक दैत अछि, ओतबे मूल समीक्षाक प्रवाहकेँ अलग दिशामे लऽ जाइत अछि।

तुलना तखन आवश्यक लगैत अछि जखन चित्रक व्याख्या अथवा पाठक-वर्गक निर्णय विशेष रूपसँ विवादित हो। अन्यथा संक्षिप्त टिप्पणीक रूपमे एहि शोध-सामग्रीकेँ रखला सँ 'पइठ'क निकटपाठ अधिक सघन बनल रहितैक। एतय ग्रन्थक उद्देश्यबहुलता—रचनाक आलोचना आ मैथिली बालवाङ्मयक इतिहासक रूपरेखा—आंशिक रूपसँ टकराइत अछि।

'डायरीक खाली पन्ना' : अधिकारक प्रकाश आ आत्मसाक्ष्यक अन्हार

दोसरा खण्डमे महाविद्यालयक प्राचार्य सार्वजनिक व्यवस्थापन, राजनीतिक निकटता, प्रतिष्ठा, परीक्षा, नियुक्ति आ छात्र-आन्दोलनक अनेक दबावसँ घेरायल छथि। आरम्भमे डायरी लिखबाक इच्छा आत्मकथनक स्वप्न बनैत अछि; बादमे प्रशासनिक व्यस्तता आ छवि-रक्षाक गणना अनुभवकेँ लिखित रूपमे स्थिर नहि होय दैत। समालोचक एहि खाली पन्नाकेँ समयक साधारण अभाव नहि, सत्य-स्वीकारक नैतिक संकट बनबैत छथि। एहि प्रतीक-परिवर्तनक सूक्ष्मता ग्रन्थक श्रेष्ठ आलोचनात्मक उपलब्धिसभमे गनल जा सकैत अछि।

प्राचार्यक चरित्रक मूल्याङ्कनमे समीक्षा निर्णयक सरलता नहि चुनैत। ओ हुनक प्रशासनिक दक्षता, महत्वाकांक्षा, स्वार्थ, भय, आत्मपरीक्षण आ परिवर्तनक

क्षणिक सम्भावनाकेँ एक संग देखैत अछि। पात्र न 'सुधारक'क स्थिर प्रतिमा बनैत अछि, न 'भ्रष्ट अधिकारी'क सीधा दृष्टान्त। एकर विश्लेषण आधुनिक संस्थागत जीवनक अनुभवसँ मिलैत अछि: व्यक्ति व्यवस्था बनबैत अछि आ व्यवस्था ओहि व्यक्तिक नैतिक विकल्पकेँ सीमितो करैत अछि।

भवन, परीक्षा आ संरक्षण : संस्था एक समाज-चित्र

महाविद्यालयक भवन-विस्तारक दृश्य प्रगतिक दृश्य-प्रमाण दैत अछि, मुदा कथाक अनुसार ओहि विकासक संग स्थानीय दबाव, दावेदारी आ नियुक्ति-व्यवस्थाक संकटो गाढ़ होइत अछि। समालोचक उचित भेद करैत छथि जे भौतिक निर्माण आ नैतिक संस्थान-निर्माण समान नहि। एतहि एहि रचनाक विषय प्राचार्यक निजी विफलतासँ बढ़ि सार्वजनिक शिक्षाक जवाबदेही भऽ जाइत अछि।

बृन्दावन बाबू आ बल्लि बाबू सन पात्रक उल्लेख स्रोत-पाठमे सत्ता-संरचनाक अलग रूप चिन्हबाक निमित्त अछि। एक दिस सामाजिक निकटता आ मान्यताक प्रतीकात्मक शक्ति, दोसर दिस हस्तक्षेप आ प्रत्यक्ष दबावक कारोबारी शक्ति। शिक्षक, अधिकारी आ छात्रसभ एहि तन्त्रमे अलग-अलग स्थितिमे छथि। समीक्षाक विशेषता ई जे आन्दोलनक आवाजकेँ सीधे अवैध अथवा सीधे निष्कलंक नहि ठहरबैत; वास्तविक प्रतिरोध, बाहरी उपयोग आ अफवाहक बीच निर्णयक कठिनाई स्वीकारैत अछि।

मुदा संस्थागत प्रसंगक गणना बढ़लाक संग डायरीक रूपक कतेको पृष्ठ लेल पाछाँ सरकैत अछि। समालोचक स्वयं ई सीमा चिन्हैत छथि, मुदा आलोचनाक अपन संरचनामे सेहो घटनाक अलग-अलग उपशीर्षकक लम्बी शृंखला ओही दूरीकेँ दोहरबैत अछि। कथा-घटनाक सारांश आ घटनाक अर्थ-निर्णय बीच अधिक स्पष्ट भेद रहितैक तँ आलोचनाक पाठकीय लय सुधरित।

लिखब, नहि लिखब आ सत्यक नैतिकता

रिक्त पन्नाक सर्वाधिक रोचक प्रश्न ई नहि जे प्राचार्यक हाथमे कलम उठल कि नहि, वरन् ई जे ओ किछु सत्य किएक दर्ज नहि करै पबैत छथि। पदक

सार्वजनिक भाषा निर्णयक औचित्य बतबैत अछि; आत्मलेखनक निजी भाषा ओहि औचित्यक पाछाँ दबि गेल संकोच खोलि सकैत अछि। ग्रन्थ एहि दुनू लेखा-पद्धतिक फाँककेँ प्रमाण आ प्रतिष्ठाक संकटक रूपमे पढ़ैत अछि।

समयक प्रश्न सेहो एहि ठाम गम्भीर अछि। सामान्य डायरी बितल समयकेँ उपलब्ध लिखित साक्ष्यमे बदलैत अछि। मुदा प्राचार्य भविष्यक संकट, सम्भावित अपमान, अगिला सम्पर्क आ पद-लाभक अनिश्चिततामे व्यस्त छथि। भविष्यक गणना वर्तमानक अनुभवकेँ निगलैत अछि, आ अतीत रिक्त रहैत अछि। एहि विवेचनमे कथाक काल-विन्यास व्यक्तिगत मनोविज्ञानसँ संस्थागत आलोचना धरि पहुँचैत अछि।

तथापि 'आत्मसाक्ष्य'क मूल्यांकनक संग एक विपरीत सम्भावना पर अधिक ठहरब जरूरी छल। की प्रत्येक अनुभवकेँ सुसंगत लिखित स्वीकारोक्तिमे परिणत करब उचित सम्भव अछि? कखनो रिक्तता आत्मछलक परिणाम होइत अछि, कखनो अनुभवक जटिलताक प्रमाण। मूल आलोचना प्राचार्यक बाहरी छवि-रक्षाक आधारपर पहिल अर्थकेँ प्रमुखता दैत अछि। एहि अर्थक संग दोसर सम्भावनाकेँ ठाढ़ करब पात्रक अनिर्णयकेँ आओर जटिल बनबैत।

कथावाचकक दूरी : प्राचार्यक मन आ पाठकक ज्ञान

'डायरीक खाली पन्ना'क विश्लेषण घटना आ पात्रक अनुमानक निरन्तर आवागमनपर ध्यान दैत अछि। प्राचार्य अपन निर्णयक कारण कहैत छथि, मुदा पाठक हुनक भय, लाभ-इच्छा आ स्वीकारक आवश्यकता सेहो पढ़ैत अछि। एहिसँ कथावाचकक सूचना आ पात्रक आत्मबोधक दूरी बनैत अछि। समालोचकक दृष्टिमे ई दूरी व्यंग्यक स्रोत अछि: पाठक जे देखैत अछि, प्राचार्य तकरा अपने बारेमे पूर्ण रूपेँ नहि देखैत।

व्यंग्यक एहि रूपमे बाहरी कटाक्ष कम, आत्मऔचित्यक भाषा अधिक निर्णायक होइत अछि। खण्डित प्रश्न, तुरन्त बदलैत विचार, आशंका आ आत्मसुधारक अधूर क्षण कथात्मक संवेदन बनबैत अछि। समालोचना जखन भाषिक रूपकेँ व्यक्तिक भीतरी अस्थिरतासँ जोड़ैत अछि, तखन ओकर

कथाशास्त्रीय दाबी विश्वसनीय होइत अछि। जँ मूल पाठक छोट-छोट विशिष्ट वाक्य-उद्धरण देल गेल रहितैक, तँ एहि सूक्ष्म निर्णयक परीक्षण पाठकक लेल आओर सरल बनित।

विद्यार्थी आ उषा जी : केन्द्रक बाहरक स्वर

प्राचार्यपर कथाक धुरी टिकबाक कारण छात्रक स्वतंत्र अनुभव अपेक्षाकृत समूहक रूपमे उभरैत अछि। विद्यार्थी आन्दोलन करैत छथि, नारा उठबैत छथि, कखनो बाहरी राजनीतिक उपयोगक शङ्का सेहो उठैत अछि। ग्रन्थ आलोचनात्मक सावधानीक संग कहैत अछि जे आन्दोलनक सम्पूर्ण अर्थ एकहि संस्थागत आँखिसँ तय नहि होएत। ई स्वीकार लोकतान्त्रिक दृष्टिसँ आवश्यक अछि; प्रशासनक विरुद्ध आवाजकेँ केवल अव्यवस्था मानि लेब कथा-समाजक बहुवचन नष्ट करत।

उषा जीक उपस्थितिमे प्राचार्यक आत्मसंशोधनक सम्भावना चिन्हल गेल अछि, मुदा स्त्री-पात्रक अपन बौद्धिक श्रम, निर्णय आ पेशागत संकट विस्तृत रूपेँ नहि खुलैत—ई प्रश्न समीक्षक स्वयं उठबैत छथि। एतए आलोचनाक नीतिक परीक्षण होइत अछि: पुरुषक अन्तर्विरोधक गहन पाठक संग स्त्री आ विद्यार्थीकेँ केवल ‘उसक असर’ अथवा ‘ओकर चुनौती’ बनाकऽ नहि छोड़बाक चाही। समालोचना एहि असमानताकेँ पहिचान दैत अछि; आगाँक अध्ययन ओकर पाठगत उदाहरण विस्तारसँ जुटा सकैत अछि।

बाल-साहित्यसँ दोसर तुलना : सन्दर्भक अनिवार्यता

दोसरा खण्डमे बालसाहित्य इतिहास फेर एक स्वतंत्र विस्तृत उपविभाग बनि अबैत अछि। शिशु-लोकसाहित्य, बाललोककथा, बालनाटक, चित्रकथा आ बाल-उपन्यास समीक्षा सँ ‘डायरीक खाली पन्ना’क विधागत अन्तर देखाओल गेल अछि। समालोचकक निष्कर्ष उचित अछि जे छात्रसभ उपस्थित होयब मात्रसँ कोनो प्रौढ़ संस्थागत व्यंग्य बालकथा नहि बनैत। शिक्षा-संस्थाक कथा आ बाल-पाठक लेल लिखल कथा दू भिन्न कोटि छथि।

समस्या निष्कर्षमे नहि, ओकर प्रमाणक अनुपातमे अछि। एहि भेद लेल संक्षिप्त विधागत तुलना पर्याप्त लगैत अछि, मुदा ग्रन्थ पुनः मैथिली बाल-

वाङ्मयक इतिहासक विस्तृत सामग्री उपस्थित करैत अछि। ‘पइठ’ अध्यायसँ दोहराइत एहि प्रसंगक कारण पाठककेँ लगि सकैत अछि जे एक अलग शोध-निबन्धक सामग्री दू विशिष्ट कथा-आलोचनामे वितरित भऽ गेल अछि। सम्पादकीय दृष्टिसँ साझा परिशिष्ट बनल रहितैक तँ सन्दर्भ सुरक्षितो रहैत आ मुख्य रचनाक निकटपाठ बाधितो नहि होइत।

‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’ : कहबीक अर्थक अस्थिर यात्रा

तेसरा खण्डक विषय आकारमे दू दीर्घकथासँ भिन्न कथात्मक व्यंग्य अछि। आलोचनाक अनुसार आरम्भमे कथावाचक पाठककेँ प्रत्यक्ष सम्बोधित करैत अछि, भुवन ककासँ कहबीक आशय बूझबाक चेष्टा करैत अछि, आ अपन भविष्य, मान-सम्मान, पद, बौद्धिक प्रतिष्ठा आ लाभक कल्पनामे भटकैत अछि। ‘अशर्फी’ आ ‘कोइला’ वस्तुक अर्थक स्थिर जोड़ी रहि नहि जाइत; प्रत्येक नव प्रसंग मूल्यक नब कसौटी प्रस्तुत करैत अछि।

ई समीक्षा एहि रचनाक विधा-चेतनाकेँ ध्यानमे राखैत अछि। कतहु वास्तविक घटना, कतहु कथावाचकक कल्पना, कतहु प्रश्नक तुरन्त उलटाव—ई सभकेँ एक परम्परागत रेखीय कथानकमे अँटेबाक प्रयास नहि कएल गेल। एहि कारण ‘कथात्मक व्यंग्य’क भिन्न लय बचैत अछि। ग्रन्थक एहि खण्डमे उपशीर्षक लेखकक स्वार्थ-आकांक्षा आ सामाजिक संस्थाक द्वन्द्वकेँ धीरे-धीरे प्रकट करैत अछि।

भुवन कका : लोकज्ञान आ निर्णायक अर्थक दूरी

भुवन ककाक प्रवेश पाठककेँ एक अनुभवी लोकबुद्धिक भरोसा दैत अछि। मुदा ई भरोसा कथावाचकक प्रश्नक पूर्ण समाधान नहि करैत। आलोचनाक रोचक स्थापना ई अछि जे बुजुर्गक अनुभव आ नव सामाजिक परिस्थितिक अर्थ-विभाजन बीच सरल निरन्तरता नहि। लोकोक्ति संग लोकज्ञान उपस्थित अछि, मुदा आधुनिक सामाजिक पदक्रम ओकर अर्थ अनिश्चित करैत अछि।

समालोचक भुवन ककाक तुलना खट्टर ककाक संवाद-परम्परासँ करैत छथि, मुदा कोनो प्रत्यक्ष प्रभावक दावा नहि करैत। ई स्रोत-अनुशासन प्रशंसनीय अछि। विधागत संगति आ ऐतिहासिक वंशानुक्रम एक नहि—एहि बातकेँ स्पष्ट कहब आलोचनाक साख बढ़बैत अछि। तथापि प्रभाव नहि मानबाक बादो तुलना उपयोगी बनबाक लेल विशिष्ट संवाद-युक्ति, प्रश्नक दिशा आ कथावाचकक भूमिकाक अन्तर संग अधिक पाठांश अपेक्षित रहैत अछि।

‘हम’क आत्मविसंगति आ पदक व्यंग्य

तेसरी रचनाक कथावाचकक ‘हम’ निर्णयक एकमात्र विश्वसनीय केन्द्र नहि, स्वयं हँसीक लक्ष्य अछि। ओ बड़प्पनक सपना देखैत अछि, प्रतिष्ठित व्यक्तिक निकटता चाहैत अछि, आ कहियो अपन महत्वहीनताकेँ अतिरञ्जित ढङ्गसँ स्वीकार करैत अछि। एहि आत्मव्यंग्यमे पाठक केवल चरित्रपर नहि हँसैत; समाजक मूल्य-दृष्टि सेहो उजागर होइत अछि, जे पद आ उपाधिसँ व्यक्ति-गौरवक माप करैत अछि।

विश्वविद्यालय, प्राध्यापकक वेतन, डिग्री, नौकरी आ सिफारिशक उल्लेख सामाजिक उन्नतिक अनिश्चित साधनक रूपमे पढ़ल गेल अछि। रचना ज्ञानक विरोध नहि, ज्ञानक नामपर पद-पिपासाक आलोचना करैत अछि—समीक्षक एहि विभाजनकेँ महत्त्व दैत छथि। एहि ठाम व्यंग्य पात्रक दुर्बलतापर प्रहार करैतहुँ संस्थागत लालचकेँ अदृश्य नहि होय दैत। व्यक्ति समाजक संरचनासँ प्रभावित अछि, मुदा एहि प्रभावक बहाने ओकर आत्मप्रवंचना निर्दोषो नहि बनैत।

आखिरी प्रश्न : पाठकीय स्वतन्त्रता कि निष्कर्षक अनिश्चय?

ग्रन्थक अनुसार कथावाचक अन्ततः पाठकसँ पूछैत अछि जे कहबीक आर कोनो अर्थ ज्ञात अछि कि नहि। आरम्भक प्रश्न अन्तमे लौटैत अछि; एकरा समीक्षक गोलाकार विन्यासक उपलब्धि मानैत छथि। ई तर्क उचित अछि, कारण रचना अर्थक खोजक प्रक्रिया बनैत अछि, सिद्धान्तक एक पंक्तिक प्रमाण नहि।

परन्तु खुलल अन्तक अपने-आप प्रशंसा करब पर्याप्त नहि। अनिर्णय कथामे अर्थक बहुलता उत्पन्न करैत अछि कि लेखकक किछु प्रसंगक अपर्याप्त कसावटकेँ ढाँपैत अछि, ई प्रश्न ग्रन्थ स्वयं सेहो उठबैत अछि। एहि आत्मसन्देहक कारण तेसर खण्ड अधिक विश्वसनीय बनैत अछि। किछु प्रसंग स्वतन्त्र परिहासक टुकड़ा सन होयबाक आशङ्का मानि लऽ समीक्षा कथात्मक विस्तारकेँ सर्वदा गुण घोषित नहि करैत।

तुलनात्मक खण्ड : तीन आवाज, मुदा दू मुख्य धुरी

चौथा खण्डक सबसँ सार्थक व्याख्या ‘पइठ’ आ ‘डायरीक खाली पन्ना’क दू अलग रिक्तताक बीच अछि। पहिलमे जीवितक छोटी माँग अनसुनी, परलोकक स्वीकृति लेल भोज विपुल; दोसरमे प्राचार्यक सार्वजनिक अधिकार विपुल, मुदा आत्मसाक्ष्यक पन्ना रिक्त। एक ठाम समाजक सामूहिक अनुष्ठान, दोसर ठाम एक व्यक्तिक संस्थागत सत्ता। ई भिन्न घटनामे घोषित मूल्य आ वास्तविक व्यवहारक दूरी एक साझा आलोचनात्मक सूत्र अछि।

तथापि कथ्यक समानता कथाशिल्पक समानता नहि। ‘पइठ’ बहु पात्र आ सार्वजनिक भीड़क आवाजसँ बनैत अछि; ‘डायरीक खाली पन्ना’ एक प्रमुख चेतनाक अन्तर्विरोधसँ। तुलनात्मक अध्याय एहि भिन्नताकेँ मानैत अछि। समयक गठन सेहो अलग अछि: पहिलमे जीवित अवस्थाक स्मृति वर्तमान अनुष्ठानकेँ प्रश्न करैत अछि; दोसरमे भविष्यक भय वर्तमान अनुभवक लेखा रोकैत अछि। एकरे कारण साझा ‘नैतिकता’क अधीनो दुनू कथा अपन आकार सुरक्षित राखैत अछि।

तेसर रचनाक प्रश्नात्मक प्रथमपुरुष, लोकोक्तिक बारम्बार फेरि अबैत अर्थ आ प्रत्यक्ष पाठक-सम्बोधन एहि तुलनाक भीतर तेसर कोण रचि सकैत छल। उदाहरणार्थ ‘पइठ’मे नैतिक प्रश्न समाजक अनसुनी वाणी सँ उठैत अछि, ‘डायरी’मे नलिखल आत्मवाणी सँ, आ ‘अशर्फी’मे अत्यधिक बोलैत मुदा अपना अर्थ नहि ठहरा पबैत ‘हम’ सँ। एहि त्रिपक्षीय व्यवस्थित तुलना सँ ग्रन्थक शीर्षकीय वादा पूर्णतर भऽ सकैत छल।

समय, स्मृति आ लिखित साक्ष्यक त्रिवेणी

पुस्तकक एक अव्यक्त किन्तु सामर्थ्यवान सूत्र स्मृतिक सामाजिक उपयोग थिक। 'पइठ'क घटना पूर्ण भेलाक बादो कनियाँ काकीक जीवन-स्मृति अनुष्ठानपर प्रश्न लगबैत अछि। 'डायरी'मे अनुभव लिखित स्मृति बनि नहि पबैत। 'अशर्फी'मे लोककहबी पीढ़ीक सामूहिक स्मृति बनि आवैत अछि, मुदा कथावाचक ओकर वर्तमान अर्थ नहि ठहरा पबैत। एहि तीनू स्थितिमे स्मृति क्रमशः नैतिक प्रतिवाद, असफल आत्मलेखन आ पुनर्व्याख्याक विषय बनैत अछि।

मूल ग्रन्थ एहिसँ मिलैत कतेको सूत्र दैत अछि, मुदा एहि त्रि-सम्बन्धकेँ स्वतंत्र तुलनात्मक संरचनाक रूपमे पूर्ण विकसित नहि करैत। सम्पादकीय दृष्टिसँ ई एकटा खोइने अवसर अछि। कारण तीनू रचनाकेँ जोड़बाक लेल केवल 'सभमे समाजक कपट अछि' सन सामान्य कथनसँ अधिक सघन बौद्धिक आधार एतहि उपलब्ध अछि।

कथन-अधिकार : ककरा कहबाक अवसर?

एहि ग्रन्थक पाठमे एक दोसर साझा प्रश्न ककर वाणी वैध मानल जाइत अछि से अछि। 'पइठ'मे आयोजनक सार्वजनिक शब्दक सोझाँ कनियाँ काकीक जीवनकालक अनसुनी माँग; 'डायरी'मे पदाधिकारीक औपचारिक भाषा आ ओकर निजी लेखनक रिक्तता; 'अशर्फी'मे पाठककेँ सम्बोधित करैत 'हम' आ भुवन ककाक लोकानुभव। तीनू प्रसंगमे कथन करबाक सामर्थ्य सामाजिक रूपसँ असमान बाँटल अछि।

समीक्षा जखन 'बहुस्वरता', 'दृष्टिकोण' आ 'आत्मव्यंग्य' कहैत अछि, तखन एहि अधिकार-विभाजनकेँ पकड़ैत अछि। मुदा रूपगत भिन्नता सेहो जरूरी अछि: बहु आवाज रहितहुँ केन्द्रीय कथावाचक सभपर टिप्पणी करि सकैत अछि; प्रथमपुरुष रहितहुँ ओकर कथन पर आलोचनात्मक दूरी सम्भव अछि। कथन-स्थान, नैतिक अधिकार आ सूचना-सीमा अलग कसौटी अछि। ग्रन्थक सिद्धान्ती शब्दावली उपयोगी अछि; विस्तृत वाक्य-विश्लेषणसँ ई भेद आओर स्पष्ट बनित।

साहित्येतिहासक तुलना : सावधानी आ सम्भावना

प्रस्तावनामे ‘पइठ’केँ लेखकक प्रतिनिधि कथा मानबाक सम्बन्धमे ‘उसने कहा था’क उदाहरण देल गेल अछि। ग्रन्थ स्पष्ट करैत अछि जे ई तुलना कथा-वस्तु वा शिल्पक प्रत्यक्ष समानताक दावा नहि, लेखकक साहित्यिक पहिचानमे एक रचनाक विशेष स्थानक उपमा मात्र थिक। ई स्पष्टीकरण आवश्यक अछि। अन्यथा दू कथा बीच अप्रमाणित कलात्मक समानता स्थापित भेल बुझल जा सकैत छल।

तथापि ‘प्रतिनिधि’ घोषित करब पाठकीय प्रचलन, प्रकाशन-स्वीकार, आलोचनात्मक उद्धरण आ साहित्यिक संचरणक प्रमाण माँगैत अछि। ग्रन्थ एहि सूत्रकेँ सम्भावना रूपमे रखैत अछि, सार्वभौम निष्कर्ष रूपमे नहि—एहिलेल ओकर सावधानी स्वीकारणीय अछि। भविष्यक साहित्येतिहास जँ पाठकीय ग्रहणक प्रमाण संकलित करत तँ एहि दावाकेँ पुष्ट वा संशोधित कएल जा सकत।

‘अशर्फी’ सम्बन्धी चर्चा धूर्तसमागम, खट्टर ककाक तरंग आ उत्तरकालीन व्यंग्य-ग्रन्थक सूची धरि बढ़ैत अछि। ग्रन्थ कतेको ठाम स्वीकारैत अछि जे सूचीगत सूचना सँ प्रत्यक्ष प्रभाव सिद्ध नहि होइत। एहन वाक्य अनावश्यक आत्मरक्षा नहि; साहित्येतिहासमे स्रोत आ निष्कर्षक उचित दूरीक संकेत थिक। मुदा प्रत्येक तुलनाक अन्तमे पाठ-विशिष्ट औचित्य बतायल जाए तँ सन्दर्भ-संग्रह समीक्षा पर भार नहि बनत।

सन्दर्भ-पद्धति, सिद्धान्त आ जाँचयोग्यता

अन्तिम सन्दर्भसूचीमे मूल रचनाक पत्रिका-सूचना देल गेल अछि: ‘पइठ’—अंतिका, अप्रैल–जून २००८; ‘डायरीक खाली पन्ना’—अंतिका, अक्टूबर–दिसम्बर २००८; आ ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’—संकल्प, अङ्क-संकेत ५/६८। एहि प्रकाशनसूत्रक उपस्थिति आलोचनाक महत्त्वपूर्ण गुण अछि, किएक तँ पत्रिकामे बिखरल गद्यक अध्ययन लेल मूल संस्करणक पहिचान अनिवार्य होइत। एतय सूचनासभ एहि समीक्षित ग्रन्थक सूचीसँ लेल गेल अछि; स्वतंत्र पत्रिकागत सत्यापन एहि खण्डक दावामे सम्मिलित नहि अछि।

ग्रन्थ बाख्तिन, जेनेट, रिकर आ बुर्दियोक नाम सन्दर्भसूचीमे रखैत अछि। बहुस्वरता, कथाक समय, कथावाचकक दूरी आ प्रतीकात्मक पूँजी सन विवेचनक संग एहि विमर्शसभक सम्भावित सम्बन्ध साफ देखाइत अछि। मुदा स्रोत-पाठमे एहि विचारकसभक सिद्धान्तक विशिष्ट परिभाषा, पृष्ठ-सन्दर्भ आ चरणबद्ध अनुप्रयोग व्यवस्थित रूपसँ विकसित नहि भेल अछि। परिणामतः सन्दर्भसूची सिद्धान्तक व्यापक क्षितिज देखबैत अछि, किन्तु प्रत्येक नाम विश्लेषणक जाँचयोग्य आधार बनि नहि पबैत।

किछु ठाम उद्धरण-सङ्केत सम्पादकीय सफाइक अपेक्षा राखैत अछि; उदाहरणार्थ ‘डायरी’ अध्यायमे कोष्ठकक भीतर अपूर्ण पृष्ठ-सन्दर्भ देखाइत अछि। ‘मूल कथा’क उल्लेखक संग पूर्ण ग्रन्थसूची अथवा चित्रक स्थानक स्पष्ट सूचना सर्वत्र समान नहि। एहि कमी सँ समग्र तर्क निष्प्रभावी नहि होइत, मुदा ‘पाठाधारित’ समीक्षा जँ अपना प्रमाणक खोजपथ साफ रखत तँ ओकर प्रतिष्ठा बढ़त। पृष्ठ, संस्करण आ उद्धरणक एकरूप नीतिसँ भावी संस्करण अधिक भरोसामन्द होएत।

आलोचनाक भाषा : संयम, पुनरावर्तन आ प्रस्तावनात्मक लय

गजेन्द्र ठाकुरक गद्य प्रायः एक स्पष्ट स्थापना सँ आरम्भ होइत अछि, तकर बाद कथा-संकेत दैत अछि आ अन्तमे नैतिक अथवा शिल्पगत परिणाम धरि पहुँचैत अछि। एहि त्रिक्रमसँ दीर्घ विवेचन पढ़ब सहज होइत अछि। भाषा अनावश्यक तकनीकी प्रपंचसँ बचैत अछि; ‘रिक्तता’, ‘स्वीकृति’, ‘दूरी’, ‘प्रतिष्ठा’, ‘आत्मसाक्ष्य’ सन शब्द विश्लेषणक स्थिर केन्द्र बनैत अछि। जँ पाठक मूल कथा पहिने नहि पढ़ने हो, तइयो ग्रन्थ ओकरा आलोचनाक मूल प्रश्न बुझा सकैत अछि।

एहि स्पष्टताक संग एक जोखिम जुड़ल अछि। अनेक अनुच्छेद ‘एहि प्रसंगमे’, ‘एहि कारणेँ’, ‘कथाक महत्त्वपूर्ण प्रश्न’, ‘तथापि’ सन परिचित आलोचनात्मक संरचनासँ बनैत अछि। कतेको ठाम एहि आवर्तनसँ निष्कर्षक

वजन कम नहि होइत, मुदा गद्यक आन्तरिक लय अनुमानित भऽ जाइत अछि। विचारक क्रम लगातार एकहि पथपर चलिते पाठकक सोझाँ नव चौंक, प्रतिपक्ष अथवा पाठगत सूक्ष्मता कम होय लगैत अछि।

ग्रन्थ अपन आलोचनामे सीमाक चर्चा करैत अछि; ई एकर चरित्रगत उपलब्धि अछि। 'पइठ'मे स्त्रीक स्वतंत्र कर्तृत्वक प्रश्न, 'डायरी'मे छात्र आ उषा जीक सीमित स्वतंत्र विस्तार, 'अशर्फी'मे प्रसंगगत शिथिलता—ई सभ उल्लेख लेखकक अनुमोदनात्मक उत्साहपर रोक लगबैत अछि। तथापि सीमाक ठोस परिणाम, ओकर अन्य कथाशिल्पीय उपलब्धि सँ तुलनात्मक वजन आ पाठगत प्रतिवादकेँ अधिक विस्तार देल जाए, तँ आलोचना निर्णयक दृष्टिसँ अधिक धारदार बनत।

चयन आ मूल्याङ्कन : ग्रन्थक भीतर सर्वाधिक सफल व्याख्या

एहि पोथीमे तीन स्वतंत्र आलोचनाक बीच प्राथमिकता तय करब एक वस्तुनिष्ठ सम्पादकीय उपक्रम अछि। 'पइठ'क सम्बन्धमे मृतात्माक स्वर्ग-पइठ आ जीवितक भूखक नैतिक विरोधक पहचान अत्यन्त स्पष्ट, पाठ-अनुसारी आ स्मरणीय अछि। एहि व्याख्याक शक्ति शीर्षकक गलत सामान्यीकरण रोकबाक संग अन्नक सामाजिक अर्थ खोलबामे अछि।

'डायरीक खाली पन्ना'क समीक्षामे निजी आत्मलेखन आ सार्वजनिक संस्थागत सत्ताक परस्पर अवरोध अधिक जटिल कथाशास्त्रीय उपलब्धि अछि। पात्रक आत्मऔचित्य, भविष्यभय आ लिखित सत्यक संकटकेँ जोड़बाक कारण एहि विवेचनमे एकाधिक परत भेटैत अछि। ई खण्ड पहिलेक तुलनामे कम भावात्मक नाटकीय, मुदा संस्थागत मनोविज्ञानक दृष्टिसँ अधिक समृद्ध मानल जा सकैत अछि।

'अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप'क अध्ययन लोकोक्तिक अर्थक अस्थिरता आ अविश्वसनीय प्रथमपुरुष कथावाचकक व्यंग्यात्मक शक्ति चिन्हैत अछि। विशेषतः प्रभावक अप्रमाणित दावा नहि करबाक सावधानी एकर शोध-स्वभावकेँ मजबूत करैत अछि। मुदा कथाक आठो प्रसंगक स्वतंत्र विवरण

आ ऐतिहासिक विस्तारक बीच निर्णायक शिल्प-प्रमाणक अनुपात कहियो-कहियो कम रहैत अछि। तीनू अध्ययनक महत्त्व अलग अछि; हिनका एके नम्बरपर आँकि देब एकर विधागत भिन्नता नष्ट करत।

समग्र मूल्याङ्कन : आलोचना कोन ठाम सफल, कोन ठाम अपूर्ण

ग्रन्थक पहिल उपलब्धि ई जे तीन भिन्न कथ्यवला रचनाकेँ केवल कथा-सार रूपमे नहि छोड़ल गेल; शीर्षक, समय, सामाजिक मान, स्त्री-अनुभव, संस्थागत सत्ता, संवाद आ कथन-दृष्टि सँ ओकर अर्थ-पुनर्निर्माणक प्रयत्न कएल गेल। दोसर उपलब्धि प्रश्नक नैतिक सूक्ष्मता अछि: धर्मक विरोध बनाम जीवितक प्रति दायित्व, पदक विरोध बनाम उत्तरदायी संस्था, ज्ञानक विरोध बनाम पदलोभ—एहि भेदसभमे आलोचना सरलीकरणसँ बचैत अछि।

तेसर उपलब्धि ग्रन्थक आत्मसमीक्षा थिक। रचनाक कमजोरी चिन्हबाक इच्छुक समालोचक पाठककेँ केवल प्रशंसाक अनुशासन नहि सिखबैत, मतभेदक अवसर दैत अछि। चारिम उपलब्धि पत्रिका-संकेत, लोक-वाङ्मयक सामग्री आ साहित्येतिहासक सावधानी सँ उपजल शोध-संभावना अछि। विशेषत: मूल कृतिक प्रकाशन-सूत्र भविष्यक अध्येताकेँ मूल पाठधरि पहुँचबाक दिशा दैत अछि।

कमजोरीक पहिल रूप केन्द्रीय स्थापनाक आवृत्ति अछि। ‘पइठ’क अन्न-विरोध आ ‘डायरी’क रिक्त पन्नाक नैतिक अर्थ अनेक उपशीर्षकमे फेर-फेर उपस्थित होइत अछि। दोसर रूप तुलनाक असन्तुलन अछि: घोषित तीन रचनाक साझा विश्लेषण मुख्यत: दू दीर्घकथाक संवाद बनैत अछि। तेसर रूप बाल-साहित्य इतिहासक अपेक्षाकृत पैघ विषयान्तर अछि, जकर सन्दर्भ-मूल्य रहितहुँ मुख्य कथाक समालोचनासँ अनुपात सदा समान नहि। चारिम कमी जाँचयोग्य स्रोत-उद्धरणक अपर्याप्त एकरूपता अछि।

ई सीमासभ साहित्यिक प्रयत्नकेँ अस्वीकारबाक कारण नहि, ओकर अगिला पाठ-संशोधनक दिशा थिक। समालोचना व्याख्या निर्माण करैत अछि; अधिक परिपक्व अवस्थामे ओ अपन व्याख्याक परीक्षण-पद्धतिओ स्पष्ट करैत अछि। 'नित नवल कुमार पवन' पहिल काज उल्लेखनीय रूपेँ करैत अछि; दोसर काज लेल ठोस ग्रन्थ-साक्ष्य आ तुलनात्मक पुनर्संयोजनक अवकाश बचल अछि।

सम्पादकीय निष्कर्ष : अनसुनी भूख, नलिखल जीवन आ अनिश्चित मूल्य

तीन रचनाक आलोचनात्मक अध्ययनमे एक असामान्य क्रम देखाइत अछि। पहिलमे जीवित स्त्रीक साधारण आग्रहक कोलाहल मृत्यु उपरान्तक भव्यताक सोझाँ घुरि अबैत अछि। दोसरमे सत्तासम्पन्न प्राचार्यक दैनन्दिन अनुभव कागजपर नहि टिकैत। तेसरमे कथावाचक बहुत बोलैत अछि, कल्पना करैत अछि आ अनेक सम्भावित अर्थ बतबैत अछि, मुदा एक कहबीक अर्थ निश्चित नहि कऽ पबैत। एक ठाम सुनबाक असफलता, दोसर ठाम लिखबाक असफलता आ तेसर ठाम अर्थ ठहरएबाक असफलता—ई तीनू भिन्न रचनाक गुप्त संवाद बनि सकैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक पुस्तक एहि संवादक पर्याप्त सामग्री पाठककेँ दैत अछि। ओकर मूल आग्रह ई अछि जे मनुष्यक सामाजिक प्रतिष्ठा ओकर घोषित मूल्यक पर्याप्त प्रमाण नहि। भोजक विशालता जीवितक प्रति दया सुनिश्चित नहि करैत; महाविद्यालयक पद आत्मसत्य सुनिश्चित नहि करैत; उच्च उपाधि अथवा प्रभावशाली परिचय विवेक सुनिश्चित नहि करैत। एहि मूल्य-संशयकेँ आलोचनाक स्थिर केन्द्र बनबैत ग्रन्थ कुमार पवनक तीन विशिष्ट विधाक पाठसँ संवाद करैत अछि।

एहि खण्डक सम्पादकीय निर्णय अछि जे 'नित नवल कुमार पवन'केँ मैथिली कथालोचनाक एक उपयोगी, तर्कप्रधान आ आत्मसमीक्षात्मक दस्तावेजक रूपमे पढ़बाक चाही। एकर मुख्य गुण नैतिक विरोधकेँ कथात्मक रूपसँ जोड़ब अछि; मुख्य सीमा आलोचनात्मक आवर्तन, तुलनाक अनुपात आ प्रमाण-प्रस्तुतिक असमानता। पुस्तकक उपलब्धि ओकर सर्वथा अन्तिम निर्णयमे नहि, वरन् एहि

बातमे अछि जे ओ पाठककेँ फेर प्रश्न करबाक योग्यता दैत अछि: ककर भूख सुनल गेल, के अपन जीवन लिखि सकल, आ समाज ककरा ‘मूल्यवान’ कहैत अछि?

ग्रन्थाधार आ पाठसीमा

प्रधान पाठाधार: गजेन्द्र ठाकुर, ‘नित नवल कुमार पवन : तीन रचनाक आलोचनात्मक अनुशीलन आ कथा-दृष्टिक तुलनात्मक विवेचन’, विदेह, २०२६, ६० पृष्ठ। एहि सम्पादकीय लेखमे पृष्ठ-सन्दर्भ प्रस्तुत ग्रन्थक अनुक्रम आ मुद्रित पृष्ठ-विभाजन अनुसार बुझल जाएत।

समीक्षित ग्रन्थमे उल्लिखित मूल रचनासभ: कुमार पवन, ‘पइठ’—अंतिका, अप्रैल–जून २००८; ‘डायरीक खाली पन्ना’—अंतिका, अक्टूबर–दिसम्बर २००८; ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’—संकल्प, अङ्क-संकेत ५/६८। एहि सूचना सभक स्रोत समीक्षित ग्रन्थक सन्दर्भसूची अछि; मूल पत्रिका-अङ्कक स्वतंत्र मिलान एहि सम्पादकीय पाठमे नहि कएल गेल अछि।

विधागत टिप्पणी: ई समीक्षा मूल कथासभक स्वतंत्र पुनर्पाठक विकल्प नहि, वरन् उपलब्ध आलोचना-ग्रन्थक तर्क, संरचना, भाषा आ पद्धतिक परीक्षण अछि। भविष्यक आलोचनात्मक संस्करणमे मूल रचनाक प्रत्यक्ष उद्धरण, चित्र-पृष्ठ, संस्करण-संख्या आ सन्दर्भित सिद्धान्तक विशिष्ट पृष्ठक मिलान आवश्यक होएत।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-७२

एहि खण्डमे गजेन्द्र ठाकुरक ‘नित नवल कुमार पवन’ ग्रन्थक आलोचनात्मक पुनर्पाठ प्रस्तुत अछि। ‘पइठ’, ‘डायरीक खाली पन्ना’ आ ‘अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप’क कथ्य, शिल्प, व्यंग्य, सामाजिक दृष्टि आ तुलनात्मक विवेचनक परीक्षण कएल गेल अछि। ग्रन्थक उपलब्धि आ सीमा संग मैथिली आलोचनाक पद्धति पर सेहो विचार अछि।

मूल आलोचना । तुलनात्मक पाठ । सम्पादकीय विवेचन

विदेह

विदेह डिजिटल संग्रह

© 2026 Gajendra Thakur / Preeti Thakur